प्रादर्श प्रश्न पत्र 2012

विषय – सामान्य हिन्दी

कक्षा – बारहवीं

समय– 3 घंटे **पूर्णांक– 100**

निर्देश–

1. सभी प्रश्न अनिवार्य है।
2. प्रत्येक प्रश्न के लिए आवंटित अंक उनके सामने अंकित है।
3. प्रश्न क्र. 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए है। प्रत्येक प्रश्न के लिए $1 \times 5 \times 5 = 25$ अंक निर्धारित है।
4. प्रश्न क्र. 6 से 15 तक में प्रत्येक का उत्तर लगभग 50 से 75 शब्दों में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु 4 अंक निर्धारित है।
5. प्रश्न क्र. 16 से 20 तक में प्रत्येक का उत्तर 100 से 120 शब्दों में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु 5 अंक निर्धारित है।
6. प्रश्न क्र. 21 का उत्तर लगभग 250/300 शब्दों में लिखिए। इसके लिए 10 अंक निर्धारित है।

प्रश्न 1. रिक्त स्थानों की पूर्ति दिये गये विकल्पों में से उचित शब्द का चयन कर कीजिए।

1. कवि बाल कवि बैरागी ने जीवनपथ.....होने का वरदान मांगा है।
   (सुखमय/कंटकमय)
2. बल के साथ.....का साहचर्य उसे स्वर्ग की सीमा में ले जाता है।
   (विवेक/धैर्य)
3. मुझे उत्तीर्ण होने की.....है।
   (आशा/आशंका)

4. हम कहां जा रहे है' कवि ने.....आडम्बर को नष्ट करने की बात कही है।

(बाह्म / आंतरिक)

5. किसी सुगठित, सूत्रात्मक एवं गुंफित विचार अथवा भाव के विस्तार को..... कहते है।

(निबंध / पल्लवन)

प्रश्न 2. निम्नलिखित कथनों के लिए सही विकल्प का चयन कर लिखिए –

(1) सूरदास के काव्य में दृष्टिगोचर है –

(अ) बाल क्रीड़ाएं (ब) गोचारण

(स) वात्सल्य (द) उपरोक्त सभी

(2) नर से नारायण पाठ के लेखक के अनुसार नारायण वह है जो विचरण करता है।

(अ) जल में (ब) मंदिर में

(स) मस्जिद में (द) पृथ्वी पर

(3) कब्र में पांव लटकना मुहावरें का अर्थ है –

(अ) वृद्धावस्था प्राप्त करना (ब) बेफिक्र हो जाना

(स) मृत्यु समीप आना (द) भयभीत होना।

(4) बीमार का इलाज एकांकी में कांति के छोटे भाई का नाम है –

(अ) शांति (ब) विनोद

(स) चन्द्रकांत (द) सूर्यकांत

(5) एक विशेष प्रकार का तीर, जिसके चलने से एक विशेष ध्वनि निकलती है –

(अ) कारागार (ब) कोकबान

(स) गैबरन (द) सरजा

प्रश्न 3. स्तंभ ''क'' से ''ख'' का मिलान कर सही जोड़ी बनाइए –

	क	–	**ख**
(1)	नर से नारायण	–	गोपाल सिंह नोपाली
(2)	शून्य का आविष्कारक	–	द्विगु समास
(3)	शरणागत	–	गुलाबराय
(4)	हिमालय और हम	–	तत्पुरूष समास
(5)	दोराहा	–	भारत

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए –

1. जागो फिर एक बार कविता किस भाव पर आधारित है?
2. यशोधरा की व्यथा कविता में यशोधरा ने किसको संबोधित किया है?
3. महात्मा गांधी ने अपने पुत्र को किस स्थान से पत्र लिखा था?
4. ऐसा शब्द या वाक्यांश जो सामन्य से भिन्न अर्थ का बोध कराए, क्या कहलाता है।
5. लोकोक्ति का पर्यायवाची शब्द बतलाइए।

प्रश्न 5. निम्नलिखित कथनों से सत्य/असत्य छांटकर लिखिए –

1. वे मेरे पिताजी है और पलंग पर लैटे है एक मिश्र वाक्य है।
2. अडयार पुस्तकालय उत्तर भारत में है।
3. निबंध लेखन की व्यास शैली का अर्थ है – संक्षेप।
4. वियोगिनी यशोधरा की विरह वेदना को ऋतुएं बढ़ा देती है।
5. ठेस कहानी का मुख्य किरदार 'सिरचन' स्वाभिमानी नहीं था।

प्रश्न 6. माँ कविता के आधार पर माँ के व्यक्तित्व की कोई चार विशेषताएं लिखिए।

अथवा

समुद्र और हम कविता के आधार पर हिमालय की कोई चार विशेषताएं लिखिए।

प्रश्न 7. यशोदा ने देवकी को क्या संदेश भेजा?

अथवा

जागो फिर एक बार कविता के माध्यम से कवि क्या उद्‌बोधन देता है?

प्रश्न 8. हम कहां जा रहे है? कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

अथवा

छत्रसाल की बरछी की विशेषताएं शौर्य गाथा कविता के आधार पर लिखिए।

प्रश्न 9. लेखक ने किन परिस्थितियों में स्वयं को नारायण कहा है? नर और नारायण पाठ के आधार पर बताइये।

अथवा

रवीन्द्रनाथ टैगोर को सौंदर्य की अनुभूति कैसे हुई?

प्रश्न 10. सबल के बल का सदुपयोग ही सफलता की कुंजी है। इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

लेखक ने राष्ट्रमाता किसे कहा है? और क्यों?

प्रश्न 11. मंत्रीजी ने देश का राजा चुनने की समस्या किस प्रकार हल की?

अथवा

लेखक के अनुसार नारी किस तरह भारतीय एकता का प्रतीक बन रही है।

प्रश्न 12. हिन्दी निबंध रचना में विवेचन शैली को संक्षेप में समझाइये। इस शैली के किसी एक निबंधकार का नाम लिखिए।

अथवा

भारतेंदु युग की कोई चार विशेषताएं लिखिए।

प्रश्न 13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए। कोई दो।

1. आंखों का तारा।
2. ईद का चांद होना।
3. टेढ़ी खीर।

अथवा

निम्नलिखित लोकोक्तियों का आशय लिखते हुए वाक्यों में प्रयोग करों। कोई दो।

1. एक अनार सौ बीमार।
2. सावन न भादों सूखा।
3. सांच को आंच नहीं।

प्रश्न 14. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए।

1. ये लड़कियां परस्पर एक दूसरे से बैर रखती है।
2. तुमको पुस्तक पढ़नी है।
3. उसका भाग्य फूट गया।
4. आगरा के अंदर हैजा का जोर है।
5. इंदिरा गांधी की मृत्यु पर भारत में दुख छा गया।

अथवा

बहुब्रीहि और द्विगु समास में अंतर बताइये। इन दोनों समासों के दो–दो उदाहरण लिखिए।

प्रश्न 15. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। कोई चार।

1. अस्त (विलोम शब्द)

2. मछली (कोई दो पर्यायवाची शब्द)
3. जिसके समान कोई न हो। (वाक्यांश बोधक शब्द)
4. क्या दलबीर विद्यालय जाएगा? (विधानवाचक वाक्य)
5. बेईमान (उपसर्ग छांटिए)

अथवा

1. 'अ' उपसर्ग से दो शब्द बनाइये।
2. निम्नलिखित शब्दों के संधि विच्छेद कर संधि का राम लिखिए।
   सुरेन्द्र, निर्धन।
3. समास किसे कहते है।

प्रश्न 16. निम्नांकित पद्यांश की संदर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

जीवन के इन संघर्षों में,
दुःख कष्ट के दावानल में,
तिलतिलकर तनजले न क्यों पर,
होठों पर मुस्कान चाहिए।
कंटक पथ पर गिरना, चढ़ना,
स्वाभाविक है हार जीतना।

अथवा

आशा से आकाश थमा है, स्वासं तन्तु कब टूटे,
दिन मुख दमके, पल्लव चमके, भव ने नव रस लूटे।
स्वामी के सद्भाव फैलकर फूल फूल में फूटे।
उन्हें खोजने को मानो, नूतन निर्झर छूटे।
उनके श्रम के फल सब मांगे।
यशोधरा की विनय ही।।

प्रश्न 17. निम्नांकित गद्यांश की संदर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

रावण भी बली था औ राम भी, कृष्ण में भी बल का अधिष्ठान था ओर कंस में भी, पर एक की आज जयंती मनाई जाती है ओर दूसरे का संस्मरण हमारे हृदयों में घृणा के उद्रेक का कारण होता है। सबल के बल का सदुपयोग ही उसकी सफलता की एकमात्र कुंजी है।

अथवा

भारतीय सभ्यता की प्रभावशाली उपलब्धियों को देखने पर यह विश्वास प्रबल हो जाता है कि भारत पिछली सहस्त्राब्दी में एक उन्नत समाज था। कई धर्मों के संतो, दार्शनिकों, कवियों, वैरगानिकों, खगोलविदो और गणितज्ञों के प्रेरक योगदानों के द्वारा बौद्धिक पुनर्जागरण की प्रक्रिया निंरत चलती रही है।

प्रश्न 18. निम्नांकित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

श्रम की पूंजी से अपना काज संवारो।
श्रम की सीपी में ही वैभव पलता है।
तब स्वाभिमान का दीप स्वयं जलता है।
मिट जाता है दैन्य स्वयं एक क्षण में।
छा जाती है दीप्ति धरा के कण में।
जागों, जागो श्रम से नाता तुम जोड़ों।
पथ चुनो काम का, आलस भाव तुम छोड़ो।

प्रश्न 1. उपर्युक्त पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।
प्रश्न 2. कवि ने किस पूंजी से बिगड़े कार्य संवारने की बात कही है?
प्रश्न 3. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक लिखिए।
प्रश्न 4. उपर्युक्त पंद्याश में कवि ने क्या छोड़ने का आग्रह किया है?

प्रश्न 19. निम्नांकित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

अहिंसा में दूसरे के अधिकारों की विशेषकर जीवधारियों की स्वीकृति रहती है। अहिंसा मनसा–वाचा–कर्मणा तीनों से होतीहै। अहिंसा के पीछे जियो और जीने दो का सिद्धांत रहता है। जहां अहिंसा का गान नहीं, वहां मानवता नहीं। अहिंसा मानवता का पर्याय है। मनुष्य को उसे जान लेने का अधिकार नहीं, जिसे वह दे नहीं सकता। हिंसा के बल जान लेने में ही नहीं है बल्कि दूसरों के स्वाभिमान को आघात पहुंचाने में भी होती है। अहिंसा भी सत्य का पूरक रूप है।

प्रश्न 1. मानवता का पर्याय क्या है?

प्रश्न 2. अहिंसा, किस सिद्धांत पर आधारित है?

प्रश्न 3. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

प्रश्न 4. उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

प्रश्न 20. अपने क्षेत्र के स्वास्थ्य अधिकारी को क्षेत्र की नियमित साफ–सफाई न होने के संबंध में शिकायती पत्र लिखिए।

अथवा

अपने जन्मदिवस समारोह में सम्मिलित होने के लिए अपने मित्र को आमंत्रण पत्र लिखिए।

प्रश्न 21. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए।

1. साहित्य और समाज
2. जीवन में खेलों का महत्व।
3. कम्प्यूटर क्रांति।
4. मेरा प्रिय शिक्षक।
5. बढ़ती जनसंख्या की समस्या।

– – – – – –

आदर्श उत्तर
विषय – सामान्य हिन्दी
कक्षा – बारहवीं

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर –

उत्तर 1. रिक्त स्थान –

1. कंटकमय
2. विवेक
3. आशा
4. बाह्म
5. पल्लवन

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 2. सही विकल्प का चयन –

1. उपरोक्त सभी।
2. जल में
3. मृत्यु समीप आना।
4. शांति।
5. कोकबान

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 3. सही जोडियां –

	क	–	**ख**
(1)	नर से नारायण	–	गुलाबराय
(2)	शून्य का आविष्कारक	–	भारत
(3)	शरणागत	–	तत्पुरूष समास

(4) हिमालय और हम – गोपाल सिंह नोपाली

(5) दोराहा – द्विगु समास

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 4. एक वाक्य में उत्तर –

1. राष्ट्रीय नवजागरण।
2. सखी को।
3. प्रिटोरिया जेल से।
4. मुहावरा।
5. कहावत।

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 5. सत्य/असत्य का चयन–

(1) असत्य।

(2) असत्य।

(3) असत्य।

(4) सत्य।

(5) असत्य।

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 6. मां के व्यक्तित्व में धैर्य, तीव्रता, ममता, वात्सल्य आदि गुण निहित है। मां के व्यक्तित्व में व्यापकता और गंभीरता भी है। वह संघर्ष करने की प्रेरणा भी देती है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

हिमालय और हम पाठ में हिमालय को अटल, अडिग, अविचल और अविनाशी कहा गया है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 7. यशोदा ने देवकी को संदेश भेजा कि मैं तो कृष्ण का पालन पोषण करने वाली धाय हूँ। तुम उसकी रूचियों और आदतों का ध्यान रखना। श्रीकृष्ण को प्रातः काल माखन रोटी ही देना। उसके प्रति कठोरता का व्यवहार मत करना।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

कवि का कहना है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के महासंग्राम में भारतीयों को योद्धा की तरह संघर्ष करना है। कवि का अभिमत है कि हमें संपूर्ण कायरता को त्यागकर अपने पराक्रमी और पुरूषार्थी स्वरूप को जागृत करना है। भारतीयों को वीरव्रती परंपता को अक्षुण्ण रखना है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 8. ''हम कहां जा रहे है'' कविता के माध्यम से कवि ने ये संदेश दियाहै कि हमें छदम प्रवृत्ति को छोड देना चाहिए। बाह्म आडम्बर को नष्ट कर देना चाहिए। कवि के अनुसार फंनशुई, रेकी और योगा भारतीय देन है लेहिकन विदेशी उसे अपना कहकर प्रचारित कर रहे है। कवि ने सचेत किया है कि हमें अपनी शक्ति, उपलब्धियों और सांस्कृतिक चेतना को पहचानना चाहिए। कवि के अनुसार नकली जीवन शैली को त्याग दें।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

जिस प्रकार नागिन सदैव शेषनाग के साथ रहती है और अपने शत्रुओं को खोज–खोजकर डांसती है, अर्थात उसके प्राण ले लेती है। उसी प्रकार छत्रसाल की बरछी सदा उनकी भुजा के साथ रहती है और वह भी शत्रुओं को खोज–खोजकर संहार करती है। नागिन और बरछी दोनों शत्रुओं का संहार करती है। दोनों में यही साम्य है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 9. लेखक के अनुसार नारायण का निवास स्थान जल में है और उसका घर भी वर्षा के कारण जल में डूबा हुआ था, ऐसी स्थिति में लेखक स्वयं को नारायण समझने लगा था।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

ठंडी हवा का झोंका आते ही रवीन्द्रनाथ टैगोर का पूरा शरीर चंद्रमा की चांदनी में नहा गया। वे प्राकृति सौंदर्य में इतने डूब गए कि उनके मुख से निकल पड़ा कि यह है सौंदर्य इस प्रकार अनुभव करने से उन्हें सौंदर्य की अनुभूति हुई।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 10. शक्तिशाली और सशक्त व्यक्ति यदि बल का सदुपयोग करें तो सफलता उसके कदम चूमती है। ऐसे व्यक्ति को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त होती है। राम औरकृष्ण इसके उदाहरण है इन दोनों ने बल का सदुपयोग किया था इसीलिए इनकी जयंती मनाई जाती है। रावण और कंस दोनें ने बल का दुरूपयोग किया था, यही कारण है कि उनके स्मरण मात्र से मन में घृणा उत्पन्न होती है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

लेखक ने महात्मा गांधी की पत्नी कस्तूरबा गांधी को राष्ट्र माता कहा है क्योंकि वे ह्रदय के सद्‌गुणों, विश्वास और स्वतंत्र व्यक्तित्व के कारण राष्ट्र माता बनने में सफल रही न कि राष्ट्र पिता महात्मा गांधी की धर्मपत्नि होने के कारण।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 11. मंत्री जी ने प्रत्येक एक लाख आबादी में से चुने गए एक–एक आदमी से मिलकर 300 आदमियों की एक विचार सभा की स्थापना की। इस विचार सभा ने अपना एक नेता चुना जो देश का मुखिया हुआ। इस नेता ने विचार सभा में से चार आदमी और चुन लिए और मिलकर देश का राज–काज चलाने लगे।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

लेखक के अनुसार हिन्दी फिल्मों के प्रभाव के कारण आधुनिक महाराष्ट्र, तमिलनाडु और केरल राज्यों की नारियों की वेशभूषा समान होती जा रही है। सभी स्त्रियां एक समान साड़ियां पहनती है जिसका एक सिरा दक्षिण कंधे से होता हुआ, पीछे एड़ी से छुता हुआ झूलता है। उसका सिर सदा खुला रहने का रिवाज धीरे–धीरे उत्तर के शिक्षित घरों में भी बढ़ रहा है। इस प्रकार लेखक के अनुसार वेशभूषा में भारतीय नारी एकता की प्रतीक बनती जा रही है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 12. इस शैली के अंतर्गत लेखक तर्क–वितर्क, प्रमाण–पुष्टि, व्याख्या और निर्णय आदि का सहारा लेता हुआ विषय का प्रतिपादन करता है। इस शैली में गहन अध्ययन और चिंता के आधार पर लेखक अपना कथ्य प्रस्तुत करता है। विचारात्मक निबंधों के लिए इस शैली का बहुलता से प्रयोग किया जाता है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

भारतेंदु युग की विशेषतएं –

1. विषय वैविध्य।
2. समाज सुधार का प्रबल आग्रह।
3. उन्नत राजनैतिक चेतना।
4. रोचकता और मुक्त हास्य व्यंग्य।

सामाजिक जीवन की विकृतियों और जर्जर मान्यताओं पर प्रहार करना, नवीन प्रवृत्तियों को स्वीकार करना और भारतीय संस्कृति की उज्जवल परंपराओं को रेखांकित करना इस युग के निबंधों की सामान्य प्रवृत्तियां थी।

उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं एवं कोई अन्य बिन्दुओं पर भी विस्तार से दिये जाने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 13. (अ) मुहावरें

1. आंख का तारा – सबसे प्रिय

   प्रयोग– इकलौती संतान अक्सर माता–पिता की आंख का तारा होती हैं।

2. ईद का चांद होना – बहुत दिनों बाद दिखाई देना।

   प्रयोग– उधार लेने वाले कई लोग अक्सर ईद का चांद हो जाते है।

3. टेढ़ी खीर – कठिन कार्य।

   प्रयोग– पूर्ण लगन और परिश्रम से श्रम करने पर जीवन में कोई भी कार्य टेढ़ी खीर नहीं है।

अथवा

आशय एवं वाक्य प्रयोग –

1. एक अनार सौ बीमार – मांग और आपूर्ति में बहुत अंतर।

प्रयोग– सुरेश, उस क्षेत्र का अकेला श्रेष्ठ चित्रकार था इसलिए उसकी स्थिति एक अनार सौ बीमार के समान थी।

2. न सावन हरा न भादों सूखा – जैसे का तैसा।
   प्रयोग– जीवन का ये कटु सत्य है कि हमें न सावन हरा न भादों सूखा जैसी स्थिति में रहना चाहिए। क्योंकि सुख और दुख जीवन में आते जाते रहते है।
3. सांच को आंच नहीं – सच्चाई निर्भय होती है।
   प्रयोग– महमूद ने कोई अपराध नहीं किया था इसलिए उसने भरी सभा में कह दिया कि सांच को आंच नहीं।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे। (2+2=4 अंक)

उत्तर 14. (अ) शुद्ध वाक्य

1. ये लड़कियां परस्पर बैर रखती है।
2. तुम्हें पुस्तक पढ़नी है।
3. उसके भाग्य फूट गये।
4. आगरा में हैजा का प्रकोप है।
5. इंदिरा गांधी की मृत्यु पर भारत में दुख छा गया।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

द्विगु समास – इसमें पहला पद दूसरे पद की विशेषता संख्या में बताता है।

उदाहरण– चतुर्भुज – चार भुजाओं का सपूत,
नवरत्न।

बहुब्रीहि समास – इसमें संख्या वाची पहला पद और दूसरा पद मिलकर तीसरे पद की विशेषता बताते है।

उदाहरण – चतुर्भुज – चार भुजाएं है जिसकी अर्थात विष्णु।
गिरिधर अर्थात विष्णु

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 15.

1. उदय।
2. मीन, झख।
3. अद्वितीय।
4. दलबीर विद्यालय जाएगा।
5. बे।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

1. अचल, अचर, असंगत, असंबद्ध।
2. सुर+इन्द्र – गुण संधि (स्वर संधि)
3. निः+धन – विसर्ग संधि।
4. जब परस्पर संबंध रखने वाले शब्दों को मिलाकर उनके बीच आई विभक्ति आदि का लोप करके उनसे एक पद बना दिया जाता है, इस प्रक्रिया को समास कहते है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल चार अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 16. पद्यांश की संदर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या –

संदर्भः– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्त में संकलित कविता मां से संकलित है। इसके कवि बाल कवि बैरागी है।

प्रसंग :– इस काव्यांश में कवि मां से वरदान स्वरूप ऐसी शक्ति की कामना करती है कि कष्टों में भी जीवन में प्रसन्नता बनी रहें।

व्याख्या :– कवि मां से कामना करता है कि वरदान स्वरूप ऐसी शक्ति प्रदान करें कि जीवन मार्ग पर बढ़ते हुए जीवन के संघर्षों में दुख और कष्टों को जंगल की आग में ये शरीर थोड़ा–थोडा जलकर क्यों न जले किंतु इन समस्त

कष्टों दुखों में भी जीवन की प्रसन्नता समाप्त न हो। कवि चाहता है कि जीवन में कष्टों और दुखों के कारण यह शरीर धीरे–धीरे नष्ट क्यों न हो जाए किंतु होठों पर सदा मुस्कान बनी रहनी चाहिए। मुख पर निराशा या पीड़ा के भाव नहीं होना चाहिए। कांटों और दुखों विपत्तियों से भरे जीवन मार्ग पर बढ़ते हुए अवनति की ओर जाना चाहिए औ फिर उठकर चढ़ना तथा जीवन में हार जीत आना तो स्वाभाविक प्रक्रिया है।

(1+1+3=5 अंक)

अथवा

पद्यांश की संदर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या –

संदर्भः– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कविता यशोधरा की व्यथा से उद्धृत किया गया है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त है।

प्रसंगः– यशोधरा, प्रस्तुत पद्यांश के अनुसार आशान्वित है कि उसके पति एक दिन अवश्य आयेंगे।

व्याख्याः– यशोधरा कहती है कि यह आधारहीन आकाश, आशा की भित्ति पर ही टिका हुआ है। यदि जीवन में आशा न हो तो जीवन का सूत्र कभी भी टूट सकता है। अंधकार के पश्चात सारा संसार प्रकाश में जगमगा उठता है लेकिन यशोधरा को विश्वास है कि कल उसके जीवन में प्रकाश आयेगा नये–नये पत्ते पल्लवित होंगे। आकश को भी स्वविश्वास के कारण फल मिला है। वहां सूर्योदय के बाद संसार में नवीन आनंद की लहर फैल गई और अंकुर फूट पड़े। वातावरण में चारों और उल्लास दृष्टिगोचर हुआ। जिस प्रकार पुष्पों की सुगंध से सारा उपवन महक उठा है उसी प्रकार कल उसके पति का यश सारे संसार में फैलेगा। उद्दात बेग से बहती हुई निर्झरिणियों को देखकर ऐसा लगता है मानों ये उसके पति के बाद प्रसन्नार्थ वेग से दौड़ी जा रही हें यशोधरा यही विनय करती है कि उसके प्रियतम अपनी तपस्या के परिश्रम के परिणाम स्वरूप जो फल पावे उसका भागी समस्त विश्व बनें।

(1+1+2+1=5 अंक)

उत्तर 17. गद्यांश की संदर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या –

संदर्भः– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित निबंध बल बहादुरी से उद्धृत है। इसके लेखक कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर है।

प्रसंग :– प्रस्तुत गद्यांश में निबंधकारों ने बल के सदुपयोग और दुरूपयोग में अंतर को स्पष्ट किया है।

व्याख्या :– लेखक कहता है कि राम और रावण दोनों शक्तिशाली थे। भगवान श्रीकृष्ण भी शक्ति के वास स्थान थे और कंस भी बलशाली थे लेकिन फिर भी इनमें से किसी का जन्मदिन बड़ी धूमधाम से बनाया जाता है जबकि दूसरे की याद करते ही हृदय में घृणा की वृद्धि होती है। इसका कारण है कि एक ने अपनी शक्ति का उपयोग जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए किया था जबकि दूसरे शक्तिशाली ने जनता के अधिकारों का बलपूर्वक हनन किया। एक ने प्रेम द्वारा जनता को अपना बनाया जबकि दूसरे ने अपनी ताकत का प्रयोग स्वार्थ पूर्ति के लिए किया। लेखक का अभिमत है कि सशक्त की ताकत का सदुपयोग ही उसकी सफलता का आधार है।

(1+1+3=5 अंक)

अथवा

गद्यांश की संदर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या –

संदर्भः– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित लेख मेरे सपनों का भारत से उद्धृत किया गया है इसके लेखक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम है।

प्रसंगः– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने प्राचीन भारत की उपलब्धियों के आधार पर बौद्धिक पुनर्जागरण की प्रक्रिया के निरंतर चलते रहने की ओर ध्यान आकृष्ट कर रहा है।

व्याख्याः– लेखक कहता है कि भारत विगत एक हजार वर्षों के दौरान एक उन्नत समाज था, ये बात प्राचीन भारतीय सभ्यता की विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावशाली प्राप्तियों को देखने से प्रमाणित हो जाता है। ये विश्वास दृढ़ हो जाता है कि भारत एक प्रगतिशील देश था। भारत में प्रचलित विभिन्न धार्मिक संत, ऋषि महर्षियों, दर्शन–शास्त्र, आकाश मंडल के ग्रह नक्षत्रों की जानकारी और गणित के विद्वानों के प्रेरित करने वाले योगदानों के द्वारा बुद्धि संबंधी पुनर्जागरण की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती थी। उसके नवीन और मौलिक विचारों, सिद्धांतों और व्यवहारों ने हमारे आधुनिक बौद्धिक समाज के लिए ठोस आधार प्रदान किया है।

विशेष :– भाषा तत्सम शब्दावली युक्त है। शैली विचारात्मक है।

(1+1+2+1=5 अंक)

उत्तर 18. अपठित पद्यांश के उत्तर –

उत्तर 1. प्रस्तुत पद्यांश में जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता हासिल करने के एकमात्र सूत्र परिश्रम का महत्व इंगित किया गया है। आलस्य को त्यागकर श्रम को अंगीकार करने का आव्हान किया गया है ताकि स्वाभिमान से जीकर यश और वैभव प्राप्त कर सको।

उत्तर 2. श्रम रूपी पूंजी से।

उत्तर 3. सफलता का मूल मंत्र– श्रम।

उत्तर 4. आलस्य की भावना।

(2+1+1+1=5 अंक)

उत्तर 19. अपठित गद्यांश के उत्तर –

उत्तर 1. अहिंसा।

उत्तर 2. जियो और जीने दो।

उत्तर 3. अहिंसा मानवता की मुख्य संरक्षक है। किसी व्यक्ति को मन, वचन और कर्म अर्थात किसी भी दृष्टि से ठेस पहुचाना हिंसा है। हमें सृजन की ओर बढ़ना है न कि विनाश की ओर। सत्य का पूरक अहिंसा है अर्थात अहिंसा, सत्य है।

(1+1+3=5 अंक)

उत्तर 20.

प्रति,

श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी,
जोन क्रमांक–6
सरस्वती नगर, देवास म.प्र.

विषयः– बाल विहार मोहल्ले में अनियमित साफ–सफाई होने विषयक।

महोदय जी,

उपरोक्त विषय में निवेदन है कि हम बाल विहार मोहल्ले के रहवासी क्षेत्र में व्याप्त गंदगी से परेशान है। नालियों में कचरा और कूड़ा कर्कट भरने से वे बंद है इसलिए बारिश और सीवेज का दूषित पानी सड़कों पर बह रहा है।

कचरा पेटी से नियमित रूप से कचरा नहीं उठाया जाता है न ही मोहल्ले में स्थित उद्यान की नियमित साफ सफाई नहीं होती इससे उद्यान में लगी घास बहुत बढ़ गई है और ऐसे में विषैले जीव जंतुओं की आशंका बढ़ गई है।

कृपया उपरोक्त वस्तुस्थिति को दृष्टिगत रखते हुए इस क्षेत्र की साफ सफाई के लिए उत्तरदायी अधिकारी/कर्मचारी को निर्देशित करने का कष्ट करें।

प्रार्थी

समस्त रहवासीगण

(1+3+2 = 5 अंक)

अथवा

17/15 तिलक नगर
ग्वालियर
28 अगस्त, 2012

प्रिय मोहन,

तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मैं दिनांक 30 अगस्त को अपना जन्मदिवस मना रहा हूँ। घर में इसके लिए अच्छी तैयारियां की गई है। इस अवसर पर स्वल्पाहार एवं भोजन की भी व्यवस्था की गई है। गत वर्ष तुम इस अवसर पर परीक्षा होने के कारण नहीं आ सके परंतु इस बार अवश्य आना। तुम्हारे बिना इस पार्टी का रंग फीका रह जायेगा। तुम इस अवसर पर होंगे तो मुझे बेहद खुशी होगी। आशा है तुम समय से पूर्व आकर तैयारी में उत्साह बढ़ाओंगे।

पूज्य पिताजी और माताजी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र
रविन्द्र सिंह

(1+3+2 = 5 अंक)

उत्तर 21. **निबंध लेखन–**

साहित्य और समाज

भूमिका :– साहित्य मानव जीवन से जुड़ा है कहीं भी वह मानव जीवन से अलग नहीं है। उसका निर्माण मनुष्य अपने जीवन के लिए करता है। अतः साहित्य सामाजिक विषय है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह अकेला नहीं

रह सकता, उसने अपने जीवन में एकाकीपन तथा उदासीनता को मिटाने के लिए ही साहित्य का निर्माण किया है।

साहित्य और समाज का सम्बन्ध :– द्विवेदी जी के शब्दों में साहित्य समाज का दर्पण है अर्थात समाज का वास्तविक स्वरूप साहित्य में देखा जा सकता है। समाज निर्माण के पश्चात साहित्य का निर्माण होता है और दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं। समाज की विविध प्रकार की गतिविधियों का ही साहित्य में अंकन किया जाता है। साहित्यकार अपनी सामग्री का चयन समाज के विस्तृत उद्यान से ही करता है। मानव जीवन से अलग साहित्य की कल्पना असंभव है। साहित्य समाज के विभिन्न अंगों की प्रवृत्तियों की विवेचना करता है तथा उन्हें सुरक्षित रखता है। मनुष्य की मनुष्यता का एक महत्वपूर्ण अंग साहित्य होता है तथा समाज की जीवनदायिनी शक्ति देने का कार्य इसी के द्वारा होता है।

समाज का साहित्य पर प्रभाव :– वैदिक साहित्य के अवलोकन से ज्ञात होता है कि समाज में प्रकृति पूजा चलती थी। भारत कृषि प्रधान देश है और उस युग में कृषि की उन्नति के लिए प्रकृति की प्रसन्नता अपेक्षित थी। कृषि कार्य में गोवंश की अति उपयोगिता के प्रभाव से ही गाय का महत्व इतने विस्तार से कहा गया है। इसी प्रकार वर्णाश्रम व्यवस्था का इतना व्यापक गुणगान तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था का प्रभाव है। कला का जो विकास उस युग के समाज में हो रहा था उसका प्रभाव बिहारी, देव आदि कवियों की वाणी पर भी स्वाभाविक ढंग से पड़ा। अतः पग–पग पर साहित्य समाज से प्रभावित होता रहता है।

साहित्य का समाज पर प्रभाव :– साहित्य मनोवृत्तियों का ही भाषा–चित्र होता है तथा पाठक ह्दय को उपर्युक्त अवसर पर प्रभावित करता है। समाज में क्रिया प्रतिक्रिया का क्रम चलता ही रहता है। कर्मकाण्ड की गूढ़ता ने पशु बलि की अधिकता तथा जाति पाति की कठोरता आदि सामाजिक तथ्यों ने गौतम के विचारों को झकझोरा। उन्हें सत्य, अहिंसा, गुरूजन सेवा आदि से संबंधित

साहित्य से प्रेरणा प्राप्त हुई और उन्होंने स्वयं एत्द विषयक साहित्य का निर्माण किया। फलस्वरूप समाज के रूप में क्रमशः सुधार होता जा रहा है। इसी प्रकार विदेशियों के अत्याचार से पीड़ित जनता ने साहित्य से भक्ति और अध्यात्मवाद की प्रेरणा पाई तथा उससे संघर्ष करने की शक्ति भी उत्पन्न हुई।

साहित्य समाज की प्रेरक शक्ति :– साहित्य निर्माण में कल्पना शक्ति का प्रधान हाथ है। समाज और साहित्य की घनिष्ठता का मूल कारण है मानव प्रवृत्तियां। इन्हीं प्रवृत्तियों के संकेत पर दोनों का कार्य आगे बढ़ा है। समाज को प्रेरणा देने वाली शक्ति साहित्य में है। जो कार्य अस्त्र शस्त्र, बल पौरूष तथा दबाव आदि से कठिनाई से भी नहीं हो पाता वही कार्य साहित्य से सरलतापूर्वक हो जाता है। किसी भी समाज को बदलने के लिए उसके साहित्य का बदलना आवश्यक है।

उपसंहार :– समाज का सांस्कृतिक ढांचा परिस्थितियों के प्रभाव से विकृत हो जाता है। उसके सुधार की अपेक्षा का अनुभव सभी करते हैं। जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक दो पहलू हैं और दोनों के विकास से ही मानव जीवन सुख, शांति और आनन्द की प्राप्ति कर सकता है। आज जीवन के एकांगी यानी भौतिकवादी विकास से सम्बद्ध साहित्य का निर्माण अधिक हो रहा है, अतः समाज की उन्नति एकांगी है आवश्यकता आज आध्यात्मिक विचारधारा की है, तत्सम्बन्धी साहित्य के प्रचार प्रसार की अन्यथा मानव जीवन में परम आनन्द को नहीं प्राप्त कर सकेगा।

प्रस्तुतिकरण 2 अंक, विषयवस्तु 4 अंक, भाषाशैली 2 अंक, उपसंहार 2 अंक।

उपरोक्तानुसार लिखने पर पूर्ण 10 अंक 10 अंक प्राप्त होंगे

– – – – – –